भाग - IV : समुदाय-आधारित आपदा प्रबंधन

अध्याय 7 : आपदा प्रबंध के लिए स्कूल योजना तैयार करना

आपदा अपने साथ जो समस्याएं लेकर आती है उनसे निबटने के लिए किसी भी स्थान के लोग सबसे पहले संगठित होते हैं। यह स्वाभाविक है कि विपत्ति के समय समुदाय इकट्ठा हो जाता है और उसमें एकता की भावना उत्पन्न हो जाती है। वस्तुतः समुदाय के सदस्यों को ही इस बात की जानकारी होती है कि कौनसे संसाधन हैं और कैसे उनका प्रयोग किया जा सकता है। उन्हें इस बात का पता होता है कि कौन कहां रहता है और उस पर क्या प्रभाव पड़ा होगा। किसी भी समुदाय में सदैव ऐसे परम्परागत संसाधन मौजूद रहते हैं जिनका प्रयोग आपदा से निबटने के लिए किया जाता रहा है और उन संसाधनों के बारे में केवल समुदाय को ही जानकारी होती है। आपदा के अनेक प्रभावों से निबटने के लिए उनका प्रयोग कैसे किया जाए, जैसे क्या खाया जाए, जीने की सुविधाएं कैसे जुटाई जाएं, ईंधन के कौनसे साधन का प्रयोग किया जाए, सामान्य लोगों के लिए कौनसी स्थानीय जड़ी बूटियों और चिकित्सीय पौधों का प्रयोग किया जाए।

क्या आप यह सोच सकते हैं किआपदा प्रबंध के लिए एक स्कूली छात्र के रूप में आप समुदाय के लिए क्या कर सकते हैं ?

नीचे एक कहानी प्रस्तुत है जो कि स्कूल की एक ऐसी लड़की और उसके अध्यापकों द्वारा सुनाई गई थी जिन्होंने योजना बनाई थी और बाढ़ आने पर एक बड़ी सेवा की थी।

अनेक प्रार्थना सभाओं में हमने सुना था कि आपदाओं के लिए पहले से तैयार होना कितना महत्वपूर्ण होता है। सहेलियों से घिरे हुए एक बड़े हाल में सुरक्षित बैठना यथार्थ से एकदम हटकर था। घर के आसपास प्रतिदिन सहायता करना जैसेकि शीला चाची को गली पार कराने में मदद करना, दद्दु की टांगे नहीं थीं। उनके लिए सब्जी खरीदना अच्छी बात थी ये सभी गली में थे। और उनकी मदद के लिए हम सदैव हाजिर थे लेकिन मैंने सोचा कि ऐसी स्थिति में स्कूल क्या कर सकता है ?

भुज, गुजरात में भूकम्प ने पूरा शहर तबाह कर दिया। आसपास के गांवों में शवों के ढेर लग गए। 31 अध्यापकों और 971 छात्रों की मृत्यु हो गई तथा 1015 छात्र घायल हो गए। मैंने बहुत ध्यान से समाचार पत्र पढ़ा। क्या इस सबसे बचा नहीं जा सकता था ? क्या वहां कोई आपदा प्रबंध योजनाएं मौजूद नहीं थी ?

कक्षा में यह सामान्य चर्चा हो रही थी। अध्यापिका रेणु हमें सदैव नागरिक उत्तरदायित्व के बारे में बताया करती थी। समाज विज्ञान की कक्षा में मैंने उस दिन प्रश्न किया कि "हमारे यहां स्कूल आपदा प्रबंध समिति क्यों नहीं है?" अध्यापिका रेणु ने कहा कि "क्यों नहीं ? ऐसी समिति किस बात का ध्यान रखेगी ? क्यों न हम सब मिलकर उन कार्यों की एक ऐसी सूची तैयार करें जोकि एक डी एम सी कर सकती है ? पीरियड के अंत में इस तरह की एक सूची तैयार होकर आ गई। इसमें केवल यही नहीं बताया गया था कि ऐसी समिति कौनसे काम करेगी बल्कि यह भी तय किया गया था कि समिति का कौन-कौन सदस्य होगा और उनके क्या कार्य होंगे।

स्कूल आपदा प्रबंध समिति

प्रिंसीपल को इसके बारे में बताया गया। उसने बहुत ध्यानपूर्वक सुना और कहा, "यह एक अच्छा विचार है लेकिन असली काम कौन करेगा ? मेरा सुझाव है कि लड़कों और लड़कियों का एक कार्यबल बनाया जाए जिसे खोज और बचाव कार्य के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है तथा एक अन्य दल को आपत्काल तथा प्राथमिक चिकित्सा में विशेषज्ञता दिलाई जा सकती है।"

मेरे मन में दूसरा कोई ख्याल नहीं आया। मुझे साहसिक कार्य अच्छे लगते थे। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि शेरू को प्रशिक्षित किया जाए, वह सूंघकर सभी प्रकार की गेंदों, हड्डियों और मिठाइयों का, जिन्हें मैं छिपा कर रख देती हूं, पता लगा लेता है। आपात्काल और प्राथमिक चिकित्सा समिति की पहली बैठक शुरू हुई निम्न प्रश्नावली भरी जानी थी।

तत्परता के संबंध में आपदा प्रबंध सर्वेक्षण

अपने स्कूल की इमारत को ध्यानपूर्वक देख लें और आपदा संबंधी तत्परता के लिए एक विस्तृत योजना तैयार करें। वास्तविक स्थिति की तसदीक करने के बाद प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें। खतरों की कल्पना मत करें, पता लगाएं कि क्या स्थिति में सुधार लाया जा सकता है।

1. क्या आपका स्कूल भवन सुरक्षित है ? किसी संरचनात्मक सिविल इंजीनियर से सर्वेक्षण करने के लिए कहें कि कहीं नींव बहुत उथली तो नहीं है अथवा क्या छत पक्की नहीं है ? यदि असुरक्षित बीम हो तो उनकी मरम्मत कराइए । क्या कोई रिसाव है ? असुरक्षित बिजली कनक्शन ? क्या कोई 'फाल्स सीलिंग' हैं ? क्या ध्वनि निरोधन के लिए पार्टीशन ज्वलनशील बोर्ड के बनाए गए हैं ? क्या ऐसी शेल्व व सजावटी वस्तुएं हैं जो कि भारी हैं और भूकम्प के दौरान गिर सकती हैं तथा चोट पहुँचा सकती हैं ?
2. क्या स्कूल भवन एक आपदा राहत केन्द्र के रूप में काम करने के लिए पूर्णतः सुसज्जित है ? क्या पानी के लिए उपयुक्त भण्डारण स्थान है ? क्या बाथरूमों और शौचालयों का रखरखाव संतोषजनक स्तर का है ? क्या स्कूल में सभी को दुर्घटनास्थल से भागने के काफी मार्गों की जानकारी है ? क्या अग्निशामकों की कम से कम प्रतिवर्ष में सर्विस और भराई की जाती है ?
3. क्या स्कूल तक पहुँचने का मार्ग ऐसा है कि स्कूल में बस, ट्रक, पैदल तथा साइकिल से बेरोकटोक पहुँचा जा सकता है ? क्या स्कूल का प्रवेश कस्बे के बीच में है और क्या उसके निकट कोई बड़ी सड़क नहीं है ? क्या कोई एम्बुलेंस, अग्निशामक गाड़ी स्कूल तक आसानी से पहुँच सकती है ? क्या स्कूल नदी के निकट है और क्या इसमें बाढ़ आ सकती है अथवा क्या चक्रवातों से बचने के लिए कोई भी वृक्ष और वन नहीं है? इन्हें अब उपलब्ध कराने के लिए क्या उपाय किए जाएं, कौनसे अधिकारियों से सम्पर्क किया जाए ?

भूकम्प, बाढ़, चक्रवात या आग लगने पर क्या-क्या नुकसान हो सकता है-इस बात की कल्पना करते हुए स्कूल के आस-पास चक्कर लगाना सुखद था । होने वाली दुर्घटना कहां छिपी हो सकती है ? यदि दुर्घटना हो जाती है तो बच्चे और अध्यापक क्या करेंगे ? रसायनशास्त्र की प्रयोगशाला सबसे अधिक सुरक्षित लगी और भूगोल का कमरा इसलिए असुरक्षित लगा क्योंकि उसके रैक ग्लोबों और नक्शों से भरे हुए थे । सर्वेक्षण करने के बाद हमने अपनी बैठक में प्रिंसीपल को आमंत्रित किया और अपने स्कूल को सुरक्षित बनाने के लिए उनसे मदद करने का आग्रह किया । इस बात को देखते हुए कि हम इस समस्या की ओर इतना ध्यान दे रहे हैं, एक अभिभावक ने जो कि वास्तुकार था स्कूल भवन के ढांचे में सुधार लाने की पेशकश की ।

अब ड्रिल का अभ्यास करने का समय हो गया था । भूकम्प ड्रिल, अग्नि ड्रिल, बिना घबराए भवन को खाली करने में तेजी, तत्परता, तैयारी की आवश्यकता । मुझे वह समय भाता था जबकि स्थान खाली करने की घंटी बजती थी । हमने सोचा कि यह मध्याह्न भोजन की घण्टी है । हर छात्र दौड़ रहा था और हम अपने लंच बक्स निकालने में लगे थे । तभी दरवाजा खुला और एक फायरमैन ने (जिसकी भूमिका राघव ने निभाई थी और जिसे हमारी गलती का पता था) हम सभी पर पानी फैंका । हम चेतावनी घंटी की आवाज कभी नहीं भूलेंगे और उसे स्कूल की घंटी के साथ भ्रमित नहीं करेंगे । हमने वायदा किया कि अगली ड्रिल में हम चार मिनिट से कम समय में भवन खाली कर देंगे ।

ऐसा करने में 20 ड्रिल तथा और उससे पूर्व बहुत सा मजा, घबराहटपूर्ण व्यवहार देखने को मिला । अब हम वास्तविक आपदा के घटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं हालांकि हमारे अध्यापक कहते हैं कि हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए।

फिर हमने सोचा कि एक आपत्कालीन सूची अवश्य तैयार की जानी चाहिए । हम टेलीफोन डायरेक्टरी लेकर बैठ गए और हमने निम्न के टेलीफोन नम्बर तथा नाम चिपकाकर एक सूची तैयार कर ली :

1. जिला मैजिस्ट्रेट अथवा नगर निगम आयुक्त ।

2. निकटतम दमकल केन्द्र अधीक्षक ।

3. निकटतम पुलिस थाना प्रभारी ।

4. निकटतम अस्पताल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा क्लिीनिक का प्रभारी डाक्टर ।

5. स्थानीय सिविल डिफेंस वार्डन/ अनुदेशक ।

आपदा प्रबंध समिति के सदस्यों के पतों और सम्पर्क विवरणों सहित उनके कर्तव्य प्रमुख रूप से दर्शाए गए ताकि घर और स्कूल-दोनों स्थानों पर उनके साथ सम्पर्क किया जा सके ।

मेरी सहेली नेहा जोकि रेखांकन करने और पोस्टर बनाने, गाने, नाटक में हिस्सा लेने में बहुत रुचि रखती है, वह जागरूकता सृजन दल का अंग बन गई । उसने अपने लिए तथा सभी सदस्यों के लिए एक बिल्ला तैयार किया ।

उसने तो एक परियोजना प्रस्ताव भी तैयार किया और उसे शिक्षा अधिकारी, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पास भेजा गया ।

फिर हमने यह निर्णय लिए कि व्यवस्था का जायजा लेने, अपने कौशलों का उन्नयन करने तथा पूरी तरह तैयार होने के लिए हम लोग हर महीने बैठक आयोजित किया करेंगे । हमारा लक्ष्य था, तैयार रहो, जागरूक रहो ।

अभ्यास

1. इस अध्याय में उल्लिखित विषयों के आधार पर क्या आप आग, भूकम्प, बाढ़ तथा चक्रवातों जैसे विभिन्न संकटों के लिए एक स्कूल आपदा प्रबंध योजना बना सकते हैं ? कक्षा अध्यापक छात्रों को समूह में बांट सकता है और उन्हें संकट विशिष्ट आपदा प्रबंध योजना का काम सौंप सकता है ।